Indian Philosophy

Presented By:

Mr. Shiv Charan Patel

Assistant Professor

Department of Education

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University Kanpur 208024

शिक्षा

- शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।
- **शिक्षा का दार्शनिक सम्प्रत्यय –**

जगत्गुरु शंकराचार्य – ''सः विद्या या विमुक्तये''

स्वामी विवेकानन्द – ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

महात्मा गाँधी – ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

हरबर्ट स्पेन्सर – ''शिक्षा का अर्थ अन्तःशक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है।

जॉन डीवी – ''शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने तथा अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करे।''

दर्शन

दर्शन का भारतीय सम्प्रत्यय –

उपनिषद् – ''दृश्यते अनेन इति दर्शनम्''

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् – ''दर्शन सत्य के स्वरूप की दार्शनिक विवेचना है।''

फिश्टे – ''दर्शन ज्ञान का विज्ञान है।''

काम्टे – ''दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।''

सैलर्स – ''दर्शन एक ऐसा अनवरत् प्रयत्न है जिसके द्वारा हम संसार और अपनी प्रकृति के विषय में क्रमबद्ध अनुभवों द्वारा अन्तर्दृष्टि प्राप्त करते हैं।''

''दर्शन ज्ञान की वह शाखा है जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अंतिम सत्य एवं मानव के वास्तविक स्वरूप, सृष्टि–सृष्टा, जीव–जगत्, आत्मा–परमात्मा, ज्ञान–अज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय–अकरणीय कर्मों का तार्किक विवेचन किया जाता है।''

दर्शन

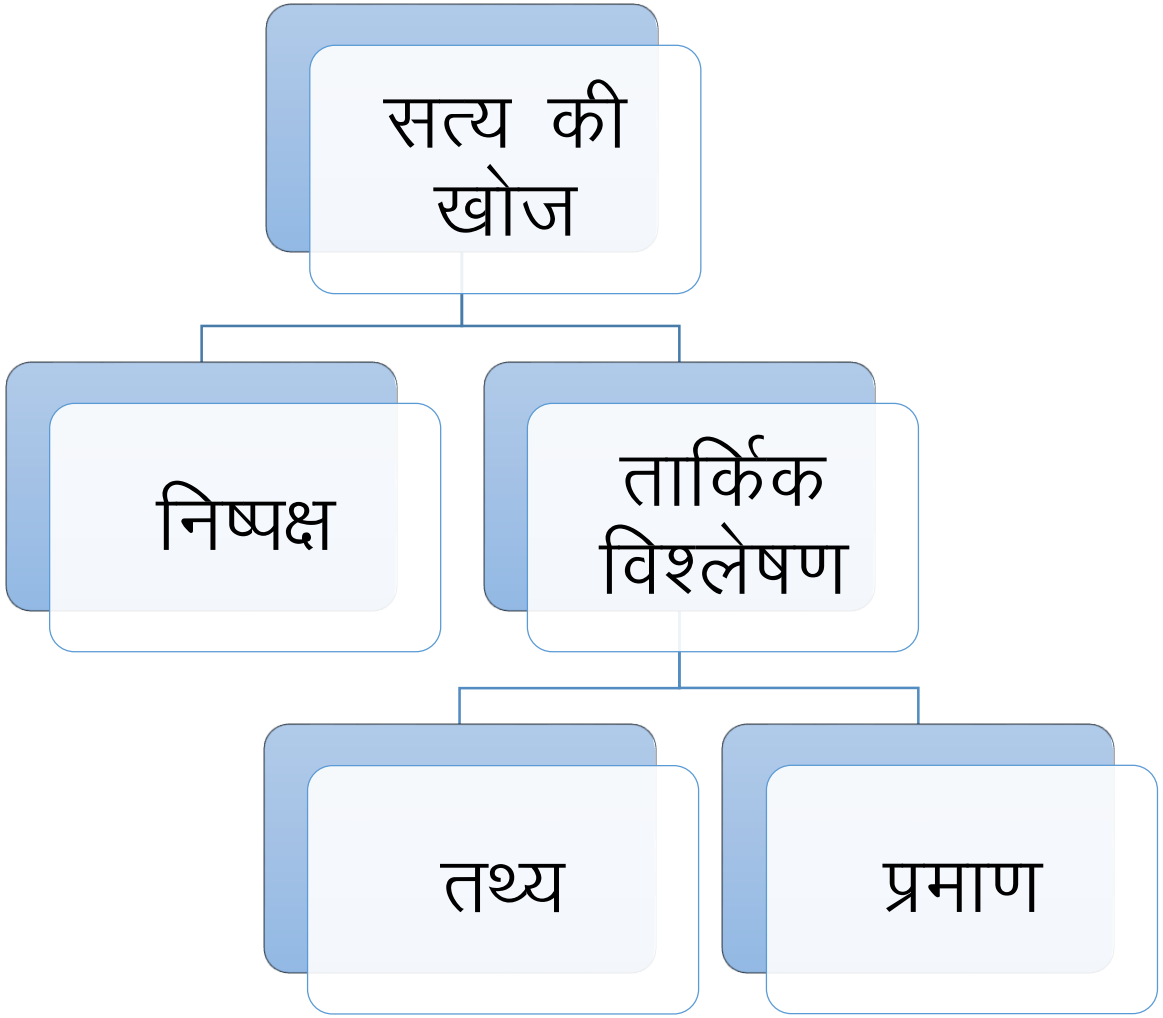

दर्शन की विशेषतायें

- दर्शन अनुभव, परिकल्पना एवं तर्क आधारित शास्त्र है, प्रयोग सिद्ध विज्ञान नहीं।
- दर्शन व्यक्तिनिष्ठ शास्त्र है, वस्तुनिष्ठ शास्त्र नहीं।
- दर्शन में इस ब्रह्माण्ड के अन्तिम सत्य (Ultimate Reality) की तार्किक विवेचना की जाती है।
- दर्शन में ज्ञान के स्वरूप और ज्ञान प्राप्त करने के साधन एवं विधियों की तार्किक विवेचना की जाती है।
- दर्शन में मूल्यों एवं मनुष्य के करणीय तथा अकरणीय कर्मों की तार्किक विवेचना की जाती है।

दर्शन की शाखाएँ

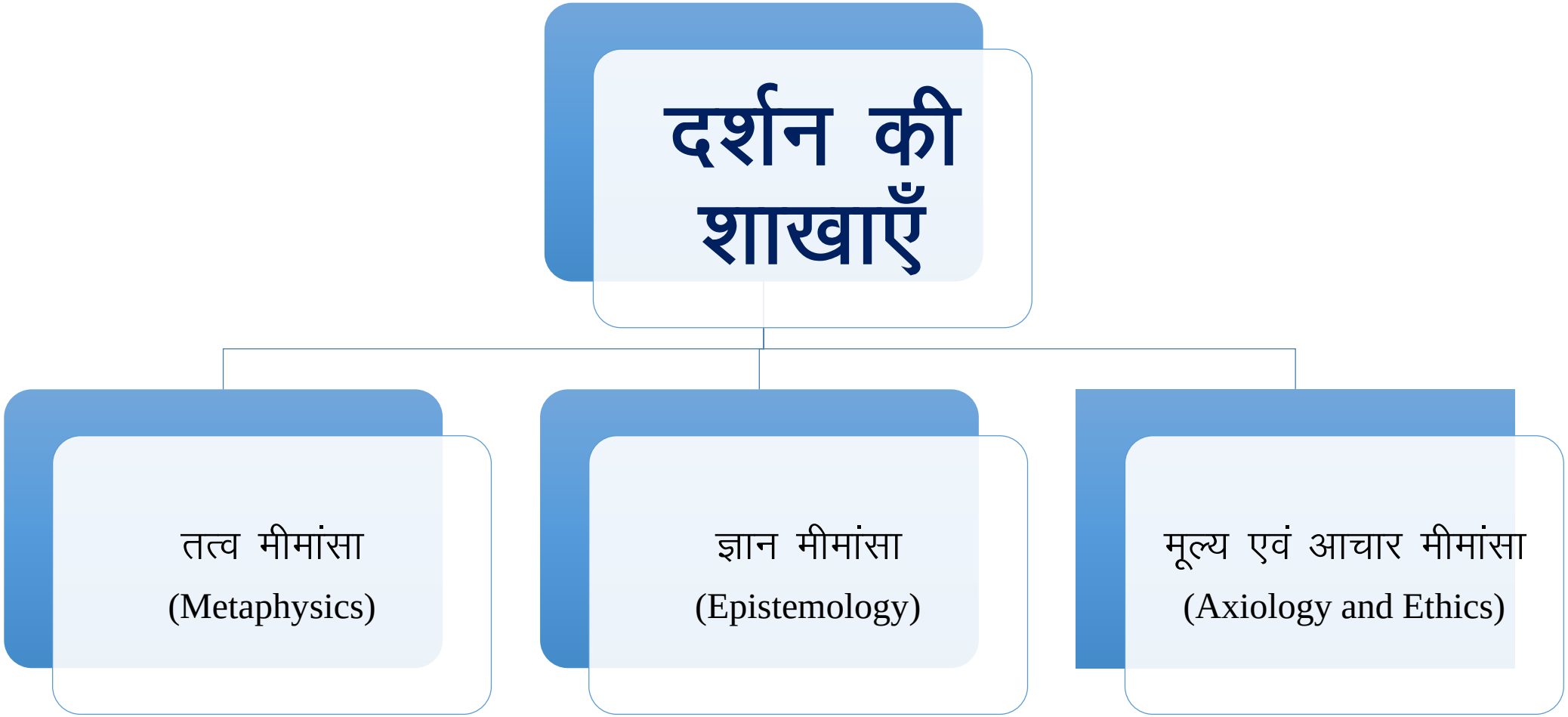
दर्शन की शाखाएँ
तत्व मीमांसा
(Metaphysics)
ज्ञान मीमांसा
(Epistemology)
मूल्य एवं आचार मीमांसा
(Axiology and Ethics)

आत्म तत्व सम्बन्धी ज्ञान
(Methaphysics of the Soul)
सृष्टि–उत्पत्ति का शास्त्र
(Cosmogomy)
ईश्वर सम्बन्धी तत्व ज्ञान
(Theology)
तत्व मीमांसा
(Methaphysics)
सृष्टिशास्त्र
(Cosmogomy)
सत्ताशास्त्र
(Ontology)

ज्ञान का सम्प्रत्यय
(Concept of Knowledge)
ज्ञान की प्रमाणिकता
(Testimony of Knowledge)
ज्ञान के प्रकार
(Type of Knowledge)
ज्ञान मीमांसा
(Epistemology)
ज्ञान प्राप्त करने की विधियाँ
(Methods of Gaining Knowledge)
ज्ञान के स्त्रोत
(Sources of Knowledge)

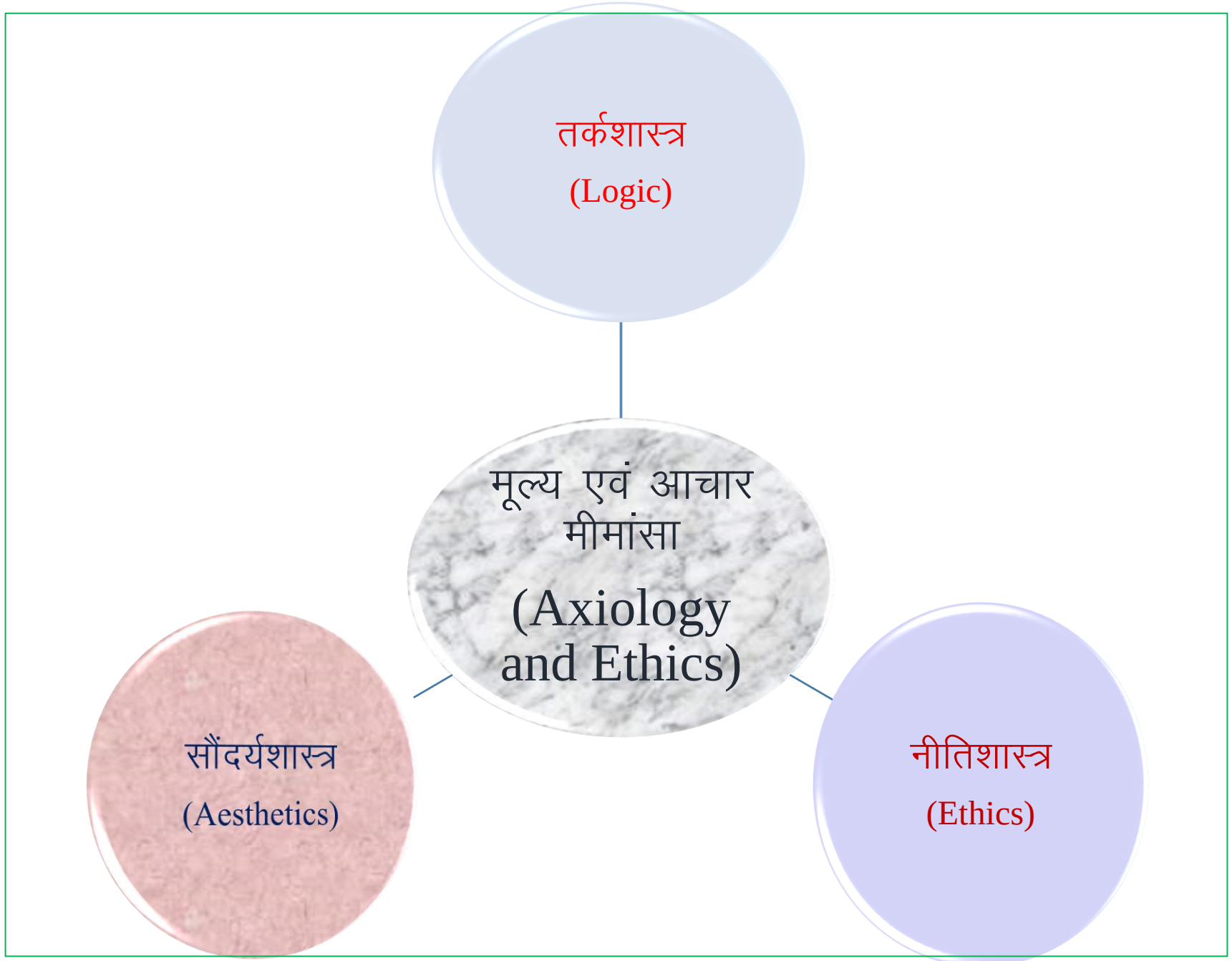
तर्कशास्त्र
(Logic)
मूल्य एवं आचार मीमांसा
(Axiology and Ethics)
सौंदर्यशास्त्र
(Aesthetics)
नीतिशास्त्र
(Ethics)

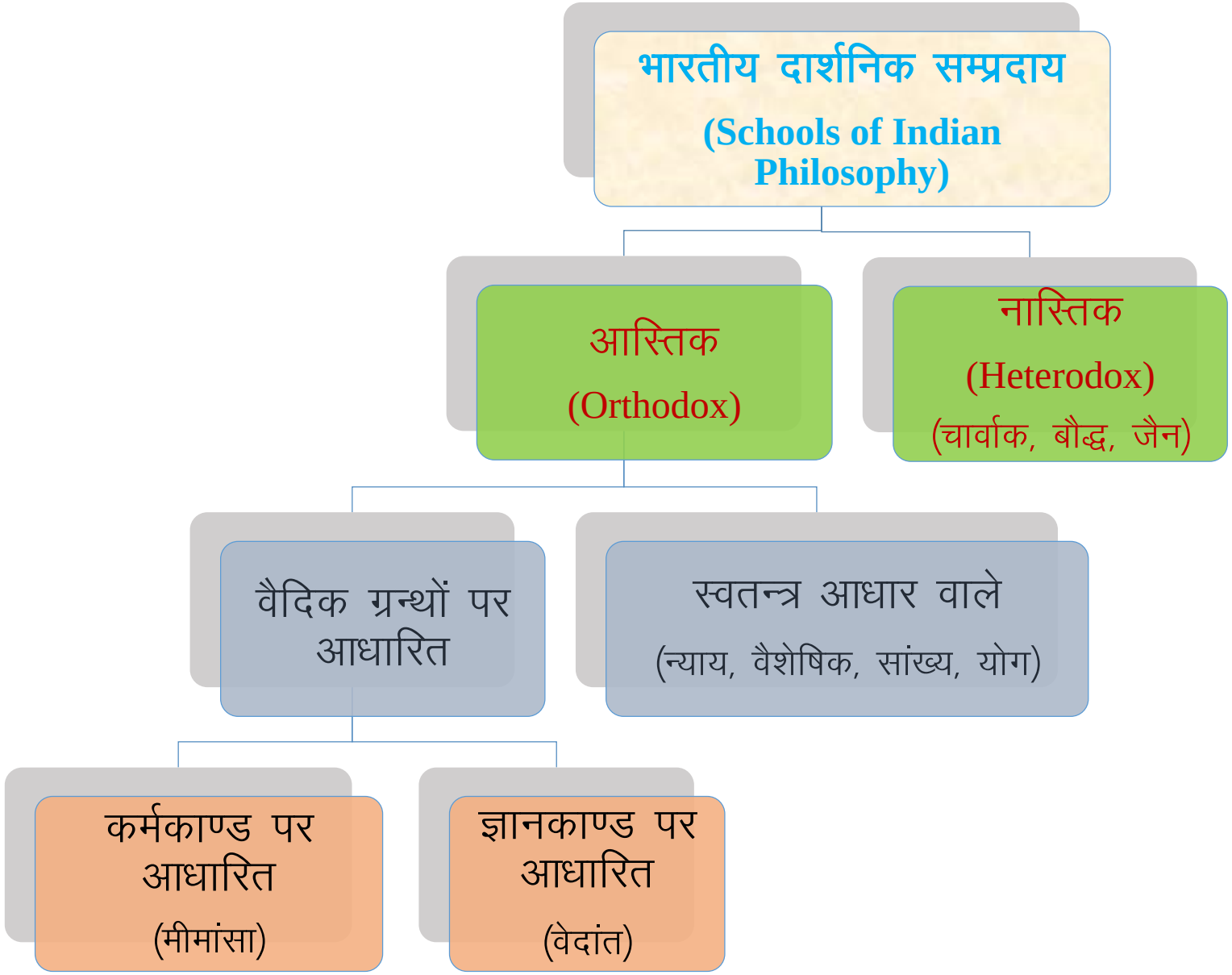
भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय
(Schools of Indian Philosophy)
आस्तिक
(Orthodox)
नास्तिक
(Heterodox)
(चार्वाक, बौद्ध, जैन)
वैदिक ग्रन्थों पर आधारित
स्वतन्त्र आधार वाले
(न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग)
कर्मकाण्ड पर आधारित
(मीमांसा)
ज्ञानकाण्ड पर आधारित
(वेदांत)

भारतीय दर्शनों की सामान्य विशेषताएँ

(Common Characteristics of Systems of Indian Philosophy)

- संसार दुःखमय है।
- आत्मा की सत्ता में विश्वास (चार्वाक को छोड़कर)
- 'कर्म सिद्धान्त' में विश्वास (चार्वाक को छोड़कर)
  1. संचित कर्म
  2. प्रारब्ध कर्म
  3. संचीयमान कर्म
- पुर्नजन्म में विश्वास (चार्वाक को छोड़कर)
- व्यावहारिक पक्ष पर बल

प्रो. हरियाना – ''दर्शन सिर्फ सोचने की पद्धति न होकर जीवन पद्धति है।''

- अज्ञान बन्धन का मूल कारण (चार्वाक को छोड़कर)
- अज्ञानता के बन्धन से दूर होने के उपाय

भारतीय दर्शनों की सामान्य विशेषताएँ

(Common Characteristics of Systems of Indian Philosophy)

- विश्व एक नैतिक रंगमंच (चार्वाक को छोड़कर)
- आत्म–संयम पर बल (चार्वाक को छोड़कर)
- दर्शन और धर्म का समन्वय
- प्रमाण–विज्ञान (Epistemology) भारतीय दर्शन का मुख्य अंग
- भूत (Past) के प्रति आस्था
- जगत् की सत्यता में विश्वास (शंकर एवं योगाचार सम्प्रदाय को छोड़कर)

बोध प्रश्न

1. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत करें।
2. योग के 'अष्टांग साधन' (The Eightfold Path of Yoga) लिखिए।
3. बौद्ध दर्शन के 'अष्टाँगिक मार्ग' (The Eightfold Noble Path) की चर्चा करें।
4. बुद्ध के 'चार आर्य सत्य' (The Four Noble Truths) कौन–कौन से हैं ?
5. भारतीय दर्शनों की सामान्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

References

- Lal, R.B. (2018). *Philosophical and Sociological Foundations of Education.* R. Lal Book Depo.
- Oudh, L.K. (2009). *Philosophical Perspective of Education.* Rajasthan Hindi Granth Academy.
- Saxena, N.R. S. (2002). *Philosophical and Sociological Foundations of Education*. R. Lal Book Depo.
- Sinha, H.P. (2012). *Bhartiya darshan ki rooprekha*. Motilal Banarasidas.

THANK YOU!
FOR YOUR ATTENTION

E-Mail – shiv2385@gmail.com
Mob. No. - +91-9415603613